Dr. Vandana Suman
Associate Professor
Dept. of Philosophy
H. D Jain College, Ara
M. A. semester — III
Phil. CC — 10
Contemporary western Philosophy

Paper — XI

"Contemporary western Philosophy"

"Absolute Idealism"

Q. Explain the nature of the Real according to Hegel. (हीगेल के अनुसार सत् के स्वरूप की व्याख्या कीजिये।)

Ans:→ हीगेल एक मधुन जर्मन दार्शनिक थे। उनके दर्शन ने बहुत से नवीन विचारों को प्रस्तुत किया। दर्शनके सम्बन्ध में हीगेल के विचार थे कि दर्शन की रचना नहीं की जा सकती है इसको केवल समझाया जा सकता है। उन्होंने जहाँ तक बन पड़ा अपने विचारों में वास्तविकता का पुट दिया।

हीगेल के सम्पूर्ण दर्शन का आधार विवेक और तर्कवाद है। हीगेल के अनुसार प्रत्यय ही परमतत्व है। यह प्रत्यय या विज्ञान निरपेक्ष है, अतः हीगेल के निरपेक्ष प्रत्ययवादी या विज्ञान वादी माना गया है। उनका परम तत्व प्रत्यय या विज्ञान वस्तु से पृथक नहीं। अमूर्त होकर भी मूर्त से सम्बद्ध है। एक होकर भी अनेक में समाहृत है। हीगेल ने अपने सम्पूर्ण दर्शन में एकही तत्व को परमतत्व माना है, परन्तु एकसे अनेक का सम्बन्ध भी बतलाया है। उनका एक तत्व सर्वसमावेशी है। उनका परम तत्व प्रत्यय या विज्ञान सर्वप्रथम निरपेक्ष विज्ञान के रूप में प्रकट होता है। यह विज्ञान का पक्ष (Thesis) है, इसे विज्ञान का तर्कशास्त्र में निरूपण

किया जाता है। पुनः विज्ञान अपने को बाह्य प्रकृति के रूप में प्रकट करता है। यह प्रकृति विज्ञान (Philosophy of nature) का विषय है। यह विज्ञान का प्रतिपक्ष Anti-thesis है। परम तत्व विज्ञान का तीसरा स्वरूप क्योंकि दोनों का समन्वय है, यह विज्ञान का समन्वय रूप (Synthesis) है। यह आत्म तत्व है। हीगेल के अनुसार आत्म विज्ञान में परम विज्ञान के आन्तरिक तथा बाह्य रूप का समन्वय हो जाता है।

अर्थात् हीगेल की धारणा थी कि विवेक गतिशील है, वह बदलता रहता है, यथार्थ और विवेक में सदैव संघर्ष होता रहता है, जब द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया प्रारम्भ होती है ऐसी अवस्था में किसी वस्तु का विकास सीधा नहीं होता है बल्कि टेढ़े और चक्करदार के रूप में होता है। किसी भी वस्तु या संस्था का निर्माण तीन अवस्थाओं में से होकर गुजरता है, जिसको हीगेल ने तीन नाम दिये हैं — (1) वाद (Thesis), (2) प्रतिवाद (Anti-thesis) और (3) संवाद (Synthesis) वाद में वास्तविकता का एक रूप, प्रतिवाद में उसका दूसरा रूप और संवाद में इनका समन्वय हो जाता है और एक नवीन आकार का जन्म होता है। द्वन्द्ववाद विशुद्ध तर्क की अत्यन्त निराकार धारणा सत्ता से आरम्भ होता है और उसका अन्त विचार के अत्यन्त साकार रूप अपनी पूर्ण व्यापकता तथा साकारता के साथ निरपेक्ष बुद्धि के दर्शन में होता है।

हीगेल के अनुसार — सर्वोच्च प्रत्यय या निज्ञान शुद्ध अस्तित्व या भाव (Pure-being) है। इस भाव का ज्ञान हम अमूर्तीकरण (Abstraction) द्वारा प्राप्त करते हैं। हीगेल अपने सिद्धान्त को सिद्ध करते हैं कि सभी का सामान्य, उनकी सामान्य सत्ता केवल भाव है। यह भाव ही प्रथम तत्व है, जिससे सभी वस्तुओं की उत्पत्ति होती है। विज्ञान को ही हीगेल सत् (Real) मानते हैं तथा स्वीकार करते हैं, सत् केवल बुद्धिगम्य है (Real is rational) इसका तात्पर्य है कि सत्ता और बोध में तादात्म्य सम्बन्ध है। बोध ही सत्ता है, सत्ता ही बोध है। परमतत्व शुद्ध सत्ता या भाव है परन्तु इस भाव को हम नहीं बतला सकते कि यह (भाव) क्या है। हमें यही मालूम है कि किसी वस्तु का विश्लेषण करने पर अन्त में केवल वस्तु की शुद्ध सत्ता ही शेष रह जाती है। हम मेज से लालपन भारीपन काठपन आदि सभी गुणों को निकाल लें तो अन्त में 'मेज है' अर्थात मेज का भाव ही शेष रहेगा। परन्तु यह भाव न तो कोई द्रव्य है और न गुण। इसे हम किसी पदार्थ या वस्तु की संज्ञा नहीं दे सकते। हम केवल यही कह सकते हैं कि मेज विभिन्न सामान्यों जैसे काठपन, भारीपन, लालपन आदि का संघात है। परन्तु इन सभी सामान्यों में सर्वोच्च सामान्य भाव है, क्योंकि यह सबकी तार्किक पूर्वापेक्षा है। तर्क की दृष्टि से पहले मेज की सत्ता मान लेते

है। इसका अर्थ है, भाव (होना) को
त्रिकात्मक रूप की हीगेल विज्ञानवादी [illegible]
कहलाते हैं। मानली सभी वस्तुओं की प्रतीति
है अर्थात् भाव (सत्ता) की आतिथ्य मानते
हैं। इस शब्द का अभिप्राय यह है कि
(जैसे) सभी सामान्य निकालते हैं। उन
सामान्यों में जो निकटतम होगा उसको
पहले निकालेगा। अतः निकटतम सामान्य
को उपजाति कहेंगे। यह निकटतम
उपजाति जाति में ही रहती है किन्तु जाति
से उपजाति का विभाजन विभेदक गुण के
कारण होगा। यह विभेदक गुण जाति में ही
विद्यमान रहता है। इसे जाति का निषेधात्मक
लक्षण कहते हैं। यह अभाव का सूचक है,
इस प्रकार प्रत्येक भाव में उसका अभाव
अन्तर्निहित है जो संश्लेषण के द्वारा
(गति के कारण) सम्भवन हो जाता है। इस
प्रकार जाति, उपजाति और विभेदक गुण
यही त्रिक रूप विकास का अन्तर्निहित
सिद्धान्त है।

जाति (Genus) = भाव (Being) पक्ष (thesis)
विभेदक (Differentia) = अभाव (Nonbeing)
प्रतिपक्ष (Anti-thesis)
उपजाति (Species) = सम्भवन (Be coming) — संश्लेष (Synthesis)

इस प्रकार जाति - विभेदक
उपजाति = भाव - अभाव - सम्भवन।
यही विश्व के सभी पदार्थों की उत्पत्ति
का क्रम है। सभी वस्तु या पदार्थ वि

ज्ञान के भी परिणाम हैं। ज्ञान विशुद्ध ज्ञान ही परमतत्त्व है।

प्रत्ययवाद में परमतत्त्व को तार्किक स्वरूप पर प्रस्तावित किया जाता है। यह परमतत्त्व निरपेक्ष रूप है। यह निरपेक्ष रूप अमूर्त विज्ञान है। यही हम विज्ञान ज्ञान चेतना कह सकते हैं। Hegel प्रत्ययवाद में इसी परम तत्त्व की सिद्धि करते हैं। हीगेल के अनुसार परमतत्त्व एक ज्ञान या चेतना है जो सभी का अधिष्ठान है।

हीगेल का कथन है कि विचारों के क्रमगत में एक विकास और व्यवस्था महत्वपूर्ण स्थापित है। उनका कहना है कि तर्क (Logic) प्रकृति (Nature) और आत्मा तीनों वस्तुएँ एक ही हैं। जो स्वयं स्वभाव में प्राप्त होती हैं। उनके अनुसार प्रकृति और विचार में अद्वैत निरपेक्षता की स्थिति होती है। वर्तमान काल और स्थान में दिखाई देता है इसी प्रकार वास्तविक भी विवेक है। हीगेल के दर्शन में द्वन्द्वात्मक तर्क है और इन्हीं के द्वारा हम आत्मिक सत्य को पहुँच सकते हैं और आत्मिक सत्य तो स्वयं विचार है। वास्तव में स्वयं विचार है। यह विचार और आत्मा को ही सत्य मानता है।

इसप्रकार हीगेल के दर्शन के तीन मौलिक आधार हैं —

(1) चेतन - मीमांसा की सारी गतिविधियाँ द्वन्द्वात्मक हैं।

(2) यथार्थता स्वयं चेतन मस्तिष्क की एक प्रणाली है।

(3) यथार्थता केवल एक विचार है। यथार्थ सत्य की प्राप्ति केवल एक विचार हेतु यथार्थ सत्य की प्राप्ति आत्मा से ही हो सकती है। आत्मा का चेतना-अवस्था तक पहुँच जाना ही इस विकास क्रम का अन्तिम ध्येय माना गया है।

इस प्रकार हीगेल के अनुसार सत् का यही स्वरूप है।